2

वर्ण-व्यवस्था

भाषा का मूलरूप मनुष्य के मस्तिष्क में बोधन और अभिव्यक्ति की क्षमता के रूप में विद्‌यमान रहता है। अतः आधुनिक भाषा-विज्ञान में भाषा को ऐसी बौद्‌धिक क्षमता के रूप में परिभाषित किया जाता है जो ध्वनि-प्रतीकों के माध्यम से अभिव्यक्त होती है। भाषा के इन्हीं पारंपरिक ध्वनि-प्रतीकों को वर्ण कहते हैं। हमारी भाषा में 'वर्ण' शब्द का प्रयोग भाषा की ध्वनियों और उन ध्वनियों को व्यक्त करने के लिए प्रयुक्त लिपि-चिह्नों दोनों के लिए होता है। इस प्रकार वर्ण भाषा के उच्चरित और लिखित दोनों रूपों के प्रतीक हैं और ये ही भाषा की लघुतम इकाई हैं। हिंदी के वर्ण देवनागरी लिपि में लिखे जाते हैं।

वर्णमाला

हिंदी भाषा के लेखन के लिए जो चिह्‌न (वर्ण) प्रयुक्त होते हैं, उनके समूह को वर्णमाला कहते है। हिंदी वर्णमाला का मानक रूप नीचे दिया जा रहा है-

स्वर - अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ

स्वरों की मात्राएँ ा ि ी ु ू ृ े ै ो ौ

('अ' की अपनी कोई मात्रा नहीं होती क्योंकि यह व्यंजन में अंतर्निहित रहता है।)

अनुस्वार - अं (ं)

विसर्ग - अः (ः)

व्यंजन -

क वर्ग	-	क	ख	ग	घ	ङ		
च वर्ग	-	च	छ	ज	झ	ञ		
ट वर्ग	-	ट	ठ	ड	ढ	ण	ड़	ढ़
त वर्ग	-	त	थ	द	ध	न		
प वर्ग	-	प	फ	ब	भ	म		
अंत:स्थ	-	य	र	ल	व			
ऊष्म	-	श	ष	स	ह			

संयुक्त व्यंजन - क्ष त्र ज्ञ श्र

आगत वर्ण - ऑ ज़ फ़

ध्यान दीजिए, हिंदी के वर्णों को अक्षर भी कहते हैं क्योंकि उनका स्वतंत्र उच्चारण हो सकता है। स्वर तो अपनी प्रकृति से ही अक्षर होते हैं परंतु हिंदी के व्यंजन वर्णों में भी 'अ' वर्ण रहता है। कई बार ऐसी स्थिति बनती है कि स्वर व्यंजन का प्रयोग करना पड़ता है। स्वर रहित व्यंजन को लिखने के लिए उसके नीचे हलंत के चिह्न (्) का प्रयोग होता है, जैसे - छ्, ट्, द्, ह्।

मानक वर्णमाला के अनुसार अंकों के लिए (संख्यावाची चिह्न) प्राचीन भारतीय अंकों के आधुनिक अंतर्राष्ट्रीय रूपों का प्रयोग होता है, जो इस प्रकार हैं-

मानक अंक	-	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9
देवनागरी अंत	-	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९

वर्णों के भेद - उच्चारण की दृष्टि से हिंदी वर्णमाला के वर्णों को दो वर्गों में बाँटा जाता है- स्वर और व्यंजन।

स्वर - जिन ध्वनियों के उच्चारण के समय हवा मुँह से बिना किसी रुकावट के निकलती है वे स्वर कहलाते हैं, जैसे- अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ ओ, औ, ऑ।

यद्यपि पारंपरिक वर्णमाला में ऋ, अं, अः को स्वरों में गिना जाता है क्योंकि ये स्वरों के योग से ही बोले जाते हैं परंतु लिखने में आ, ई की तरह ऋ की भी मात्रा, 'ृ' होती है, जैसे - कृ।

ध्यान दीजिए, ऋ स्वर का प्रयोग केवल संस्कृत के शब्दों में ही होता है, जैसे- ऋण, ऋषि, ऋतु, घृत आदि। इसका उच्चारण प्रायः भारत में 'रि' की तरह होता है। कही-कहीं (मुख्यतः महाराष्ट्र, गुजरात और दक्षिण भारत में) इसका उच्चारण 'रु' जैसे होता है।

अं और अः यद्यपि स्वरों में गिने जाते हैं परंतु उच्चारण की दृष्टि से ये व्यंजन के ही रूप हैं। अं को अनुस्वार तथा अः को विसर्ग कहा जाता है। ये हमेशा स्वर के बाद ही आते हैं। अं और अः व्यंजन के साथ क्रमशः अनुस्वार (ं) और विसर्ग (ः) के रूप में जुड़ते हैं।

अनुस्वार जिस स्पर्श व्यंजन से पहले आता है उसी व्यंजन के वर्ग के अंतिम नासिक्य वर्ण के रूप में वह उच्चरित होता है, जैसे-

गंगा,पंकज में ङ् (गङ्गा, पङ्क़ज)

मंच, कुंज में ञ् (मञ्च, कुञ्ज)

घंटा, डंडा में ण् (घण्टा, डण्डा)

दंत, बंद में न् (दन्त, बन्द)

चंपक, अंब में म् (चम्पक, अम्ब)

अंतस्थ (य, र, ल, व) और ऊष्म (श, ष, स, ह) के पहले आने पर अनुस्वार का उच्चारण पंचम वर्णों में से किसी भी एक वर्ण की भाँति हो सकता है, किंतु कोई निश्चित नियम लागू नहीं होता, जैसे- संशय, संरचना, संलाप में 'न्' संवाद में 'म्' और 'संहार' में ङ्। शब्द के अंत में स्वर-रहित म् की तरह, जैसे-स्वयं।

विसर्ग का प्रयोग तत्सम शब्दों में ही होता है और उसका उच्चारण 'ह्' की तरह होता है, जैसे प्रातः।

'ऑ' अंग्रेजी की एक स्वर ध्वनि है, इसलिए इसका प्रयोग अंग्रेज़ी से आगत शब्दों में ही होता है, जैसे-कॉलेज, ऑफ़िस, डॉक्टर। 'आ' के रूप में भी इसका प्रयोग होता है जैसे-कालेज, आफ़िस डाक्टर।

स्वर वर्णों के भेद : हिंदी में स्वरों के मूलतः दो भेद हैं-

1. निरनुनासिक 2. अनुनासिक

1. निरनुनासिक स्वर - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ

2. अनुनासिक - अँ, आँ, इँ, ईं उँ, ऊँ, एँ, ऐं, ओं, औं

यद्यापि अनुनासिक स्वर के लिए चंद्रबिंदु का प्रयोग होता है परंतु यदि शिरोरेखा के ऊपर कोई मात्रा लगी होती है तो चंद्रबिंदु के स्थान पर केवल बिंदु का प्रयोग होता है। याद रहे हिंदी के सभी निरनुनासिक स्वरों के नासिक्य रूप होते हैं। इन स्वरों के अर्थभेदक उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं।

निरनुनासिक स्वर		नासिक्य स्वर	
अ	सवार	अँ	सँवार
आ	कहा	आँ	कहाँ
इ	बिध	इँ	बिंध
ई	वही	ईं	वहीं
उ	उगली	उँ	ऊँगली
ऊ	पूछ	उँ	पूँछ
ए	पढ़े	एँ	पढ़ें
ऐ	है	ऐं	हैं
ओ	गोद	ओं	गोंद
औ	चौक	औं	चौंक

चंपक, अंब में म् (चम्पक, अम्ब)

अंतस्थ (य, र, ल, व) और ऊष्म (श, ष, स, ह) के पहले आने पर अनुस्वार का उच्चारण पंचम वर्णों में से किसी भी एक वर्ण की भाँति हो सकता है, किंतु कोई निश्चित नियम लागू नहीं होता, जैसे- संशय, संरचना, संलाप में 'न्' संवाद में 'म्' और 'संहार' में ङ्। शब्द के अंत में स्वर-रहित म् की तरह, जैसे-स्वयं।

विसर्ग का प्रयोग तत्सम शब्दों में ही होता है और उसका उच्चारण 'ह्' की तरह होता है, जैसे प्रातः।

'ऑ' अंग्रेजी की एक स्वर ध्वनि है, इसलिए इसका प्रयोग अंग्रेज़ी से आगत शब्दों में ही होता है, जैसे-कॉलेज, ऑफ़िस, डॉक्टर। 'आ' के रूप में भी इसका प्रयोग होता है जैसे-कालेज, आफ़िस डाक्टर।

स्वर वर्णों के भेद : हिंदी में स्वरों के मूलतः दो भेद हैं-

1. निरनुनासिक 2. अनुनासिक

1. निरनुनासिक स्वर - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ

2. अनुनासिक - अँ, आँ, इँ, ईं उँ, ऊँ, एँ, ऐं, ओं, औं

यद्‌यापि अनुनासिक स्वर के लिए चंद्रबिंदु का प्रयोग होता है परंतु यदि शिरोरेखा के ऊपर कोई मात्रा लगी होती है तो चंद्रबिंदु के स्थान पर केवल बिंदु का प्रयोग होता है। याद रहे हिंदी के सभी निरनुनासिक स्वरों के नासिक्य रूप होते हैं। इन स्वरों के अर्थभेदक उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं।

निरनुनासिक स्वर		नासिक्य स्वर	
अ	सवार	अँ	सँवार
आ	कहा	आँ	कहाँ
इ	बिध	इँ	बिंध
ई	वही	ईं	वहीं
उ	उगली	उँ	ऊँगली
ऊ	पूछ	उँ	पूँछ
ए	पढ़े	एँ	पढ़ें
ऐ	है	ऐं	हैं
ओ	गोद	ओं	गोंद
औ	चौक	औं	चौंक

ह्रस्व और दीर्घ स्वर - उच्चारण में लगने वाले समय की दृष्टि से स्वरों के दो भेद हैं- ह्रस्व और दीर्घ।

ह्रस्व स्वर - जिन स्वरों के उच्चारण में कम समय (एक मात्रा का समय) लगता है, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं; जैसे- अ, इ, उ, ऋ ह्रस्व स्वर हैं। इनके उच्चारण में जो समय लगता है उसे एक मात्रा का समय कहते हैं।

दीर्घ स्वर- जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व की तुलना में अधिक समय (दो मात्रा का समय) लगता है उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं, जैसे आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।

ध्यान देने की बात है कि ये दीर्घ स्वर ह्रस्व स्वरों के दीर्घ रूप नहीं है, वरन् अपने आप में स्वतंत्र हैं। पारंपरिक रूप से वर्णमाला के स्वरों का उच्चारण करते समय सामान्यतः हम 'ऐ' को 'अई' और 'औ' को 'अउ' बोलते हैं। संस्कृत में ये दोनों स्वर संयुक्त स्वर कहलाते हैं। हिंदी में इनके दो-दो उच्चरित रूप मिलते हैं। 'य' से पहले आने वाला 'ऐ' का उच्चारण 'अई' हो जाता है, जैसे-भैया-भइया, तैयार-तइयार। अन्य स्थितियों में इसका उच्चारण 'ऐ' होता है, जैसे - कैसा, पैसा, बैठा। इसी तरह 'औ' के बाद अगर 'व' आ जाए तो इसका उच्चारण 'अउ' हो जाता है, जैसे- कौवा-कउवा, हौवा-हउवा। अन्य सभी स्थितियों में इसका उच्चारण 'औ' होता है, जैसे- औरत, औसत।

व्यंजन-जिन वर्णों के उच्चारण में वायु रुकावट के साथ या घर्षण के साथ मुँह से बाहर निकलती है, उन्हें व्यंजन कहते हैं।

व्यंजनों का वर्गीकरण - व्यंजनों को उनके उच्चारण स्थान और प्रयत्न के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है।

उच्चारण स्थान के आधार पर - व्यंजनों के उच्चारण के समय हमारी जिह्वा मुख के विभिन्न स्थानों, जैसे - कंठ, तालु, दाँत आदि को छुती है, जिसके परिणामस्वरूप तरह-तरह की व्यंजन ध्वनियाँ उत्पन्न होती हैं। उच्चारण स्थान के आधार पर हिंदी के व्यंजनों का वर्गीकरण इस प्रकार है-

कंठ्य - (गले से) क, ख, ग, घ, ड़, ह।

तालव्य - (तालु से) च, छ, ज, झ, ञ, य और श।

मूर्धन्य - (ताल के मूर्धा भाग से) ट, ठ, ड, ण, ड, ढ़, तथा ष।

दंत्य - (दाँतों से) त, थ, द, ध,न।

वर्त्स्य - (दंत मूल से) स, ज़, र, ल।

ओष्ठ्य - (दोनों होठों से) प, फ, ब, भ, म।

दंतोष्ठ्य - (निचले होंठो और ऊपर के दाँतों से) व, फ़।

उच्चारण प्रयत्न के आधार पर - व्यंजनों के उच्चारण के समय श्वास की मात्रा, स्वरतंत्री का अवरोध तथा जीभ और अन्य अवयवों द्वारा अवरोध को प्रयत्न कहते हैं। प्रयत्न तीन प्रकार के होते हैं-

1. श्वास की मात्रा
2. स्वरतंत्री में श्वास का कंपन
3. जीभ तथा अन्य अवयवों द्वारा श्वास का अवरोध

श्वास (प्राण) की मात्रा के आधार पर - उच्चारण के समय श्वास की मात्रा के आधार पर व्यंजनों के दो भेद किए जाते हैं- अल्पप्राण और महाप्राण।

अल्पप्राण - जिन ध्वनियों के उच्चारण में मुख से कम वायु निकलती है, उन्हें अल्प्राण व्यंजन कहते हैं। जैसे - क, ग, ङ, च, ज, ञ, ट, ड, ण, त, द, न, प, ब, म (वर्गों के प्रथम, तृतीय और पंचम व्यंजन), ड़ और य, र, ल, व भी अल्पप्राण हैं।

महाप्राण - जिन ध्वनियों के उच्चारण में मुख से निकलने वाली श्वास की मात्रा अधिक होती है, उन्हें महाप्राण व्यंजन कहते हैं, जैसे-ख, घ, छ, झ, ठ, ढ, थ, ध, फ,भ (वर्गों के द्वितीय तथा चतुर्थ व्यंजन), ढ़ और श, ष, स, ह।

स्वरतंत्री में श्वास के कंपन के आधार पर बोलते समय वायु प्रवाह से कंठ में स्थित स्वरतंत्री में कंपन होता है। स्वरतंत्री में जब कंपन होता है तो सघोष ध्वनियाँ उत्पन्न होती हैं और जब कंपन नहीं होता है तब अघोष ध्वनियाँ उत्पन्न होती हैं। हिंदी की सघोष और अघोष ध्वनियाँ इस प्रकार हैं-

भघोष	अघोष
सभी स्वर	
ग, घ, ड़, ज, झ, ञ	क, ख, च, छ
ड. ढ़, ण, द, ध, न, ब, भ, म	ट, ठ, त, थ, प, क
(वर्गों के तृतीय, चतुर्थ और पंचम व्यंजन)	(वर्गों के प्रथम और द्वितीय व्यंजन)
तथा ड, ढ़, ज़, य, र, ल, व, ह	तथा फ़, श, ष, स।

उच्चारण अवयवों द्वारा श्वास के अवरोध के आधार पर जब हम व्यंजनों का उच्चारण करते हैं तो उच्चारण अवयव मुख विवर में किसी स्थान-विशेष का स्पर्श करते हैं ऐसे व्यजनों को स्पर्श व्यंजन कहते हैं। जिन व्यंजनों का उच्चारण करते हुए वायु स्थान-विशेष पर घर्षण करते हुए निकलती है तो इन व्यंजनों को संघषी व्यंजन कहते हैं।

उच्चारण प्रयत्न के आधार पर - व्यंजनों के उच्चारण के समय श्वास की मात्रा, स्वरतंत्री का अवरोध तथा जीभ और अन्य अवयवों द्वारा अवरोध को प्रयत्न कहते हैं। प्रयत्न तीन प्रकार के होते हैं-

1. श्वास की मात्रा
2. स्वरतंत्री में श्वास का कंपन
3. जीभ तथा अन्य अवयवों द्वारा श्वास का अवरोध

श्वास (प्राण) की मात्रा के आधार पर - उच्चारण के समय श्वास की मात्रा के आधार पर व्यंजनों के दो भेद किए जाते हैं- अल्पप्राण और महाप्राण।

अल्पप्राण - जिन ध्वनियों के उच्चारण में मुख से कम वायु निकलती है, उन्हें अल्प्राण व्यंजन कहते हैं। जैसे - क, ग, ङ, च, ज, ञ, ट, ड, ण, त, द, न, प, ब, म (वर्गों के प्रथम, तृतीय और पंचम व्यंजन), ड़ और य, र, ल, व भी अल्पप्राण हैं।

महाप्राण - जिन ध्वनियों के उच्चारण में मुख से निकलने वाली श्वास की मात्रा अधिक होती है, उन्हें महाप्राण व्यंजन कहते हैं, जैसे-ख, घ, छ, झ, ठ, ढ, थ, ध, फ,भ (वर्गों के द्वितीय तथा चतुर्थ व्यंजन), ढ़ और श, ष, स, ह।

स्वरतंत्री में श्वास के कंपन के आधार पर बोलते समय वायु प्रवाह से कंठ में स्थित स्वरतंत्री में कंपन होता है। स्वरतंत्री में जब कंपन होता है तो सघोष ध्वनियाँ उत्पन्न होती हैं और जब कंपन नहीं होता है तब अघोष ध्वनियाँ उत्पन्न होती हैं। हिंदी की सघोष और अघोष ध्वनियाँ इस प्रकार हैं-

भघोष	**अघोष**
सभी स्वर	
ग, घ, ड़, ज, झ, ञ	क, ख, च, छ
ड. ढ़, ण, द, ध, न, ब, भ, म	ट, ठ, त, थ, प, क
(वर्गों के तृतीय, चतुर्थ और पंचम व्यंजन)	(वर्गों के प्रथम और द्वितीय व्यंजन)
तथा ड, ढ़, ज़, य, र, ल, व, ह	तथा फ़, श, ष, स।

उच्चारण अवयवों द्वारा श्वास के अवरोध के आधार पर जब हम व्यंजनों का उच्चारण करते हैं तो उच्चारण अवयव मुख विवर में किसी स्थान-विशेष का स्पर्श करते हैं ऐसे व्यजनों को स्पर्श व्यंजन कहते हैं। जिन व्यंजनों का उच्चारण करते हुए वायु स्थान-विशेष पर घर्षण करते हुए निकलती है तो इन व्यंजनों को संघषी व्यंजन कहते हैं।

स्पर्श व्यंजन	संघर्षी व्यंजन
क ख ग घ ङ	ज़ फ़
च छ ज झ ञ	अंतःस्थ व्यंजन- य र ल व
ट ठ ड ढ ण	
त थ द ध न	उत्क्षिप्त व्यंजन- ड़ ढ़
प फ ब भ म	

जिन व्यंजनों के उच्चारण में श्वास का अवरोध कम होता है उन्हें अंतःस्थ व्यंजन कहते हैं और जिनके उच्चारण के समय जीभ पहले ऊपर उठकर मूर्धा का स्पर्श करती है और फिर एकदम नीचे गिरती है वे उत्क्षिप्त व्यंजन कहलाते हैं।

उल्लेखनीय है कि -

- कुछ विद्वान चवर्ग को स्पर्श-संघर्षी भी मानते हैं।
- य और व को अर्ध स्वर भी कहते हैं।
- 'र' को लुंठित व्यंजन और 'ल' को पार्श्विक व्यंजन भी कहते हैं।
- ड़ और ढ़ को उत्क्षिप्त व्यंजन कहा जाता है।

अक्षर

जब किसी एक ध्वनि या ध्वनि-समूह का उच्चारण एक झटके के साथ किया जाता है तो उसे 'अक्षर' कहते हैं। हिंदी में सभी स्वर अक्षर होते है और सभी व्यंजनों में 'अ' स्वर होने के कारण वे भी अक्षर होते हैं। इसीलिए कई बार वर्णमाला को अक्षरमाला और वर्णों को अक्षर भी कहा जाता है। हिंदी के सभी वर्ण या तो स्वर हैं या व्यंजन + स्वर हैं। आशय यह है कि अक्षर की संरचना का आधार स्वर होता है और उसके आगे और पीछे एक, दो या तीन व्यंजन हो सकते हैं। इस आधार पर हिंदी में अक्षरों की संरचना निम्नलिखित प्रकार से हो सकती है।

अक्षर की संरचना	उदाहरण
(क) एक अक्षर वाले शब्द	
1. केवल स्वर	आ
2. स्वर + व्यंजन + स्वर	अब, आज
3. व्यंजन + स्वर	न, खा हाँ,
4. व्यंजन + स्वर + व्यंजन	घर, देर, साँप
5. व्यंजन + व्यंजन + स्वर	क्या, क्यों

6. व्यंजन + व्यंजन + व्यंजन + स्वर — स्त्री, स्क्रू
7. व्यंजन + व्यंजन + स्वर + व्यंजन — प्यास, प्रेम

(ख) दो अक्षर वाले शब्द

1. स्वर + व्यंजन + व्यंजन + स्वर — अंत
2. स्वर + व्यंजन + व्यंजन + व्यंजन + स्वर — अस्त्र
3. व्यंजन + स्वर + व्यंजन + व्यंजन + स्वर — संत, शांत
4. व्यंजन + स्वर + व्यंजन + व्यंजन + व्यंजन + स्वर — शस्त्र
5. व्यंजन + व्यंजन + स्वर + व्यंजन + व्यंजन + स्वर — प्राप्त

हिंदी की एक विशेषता है कि अक्षर के अंत में आने वाला ह्रस्व अ स्वर द्रुत गति से बोलने पर लुप्त हो जाता है और सामान्य गति से बोलने पर प्रकट हो जाता है: जैसे-

सामान्य गति	**द्रुत गति**
बकरा	बक्रा
चलना	चल्ना
थकता	थक्ता

इसलिए शब्दों के उच्चरित और लिखित रूपों में कभी-कभी एकरूपता नहीं मिलती। यह धारणा कि हिंदी में जैसा बोला जाता है वैसा ही लिखा जाता है, पूर्णतया सत्य नहीं है। अक्षर संरचना के कारण शब्दों के उच्चरित और लिखित रूपों में प्राय: अंतर हो जाता है। जैसे-

लिखित रूप	**उच्चरित रूप**
आज	आज्
अन्याय	अन्नयाय्
चलता	चल्ता
मानसिक	मान्सिक्
बातचीत	बाच्चीत (बात्चीत्)

बलाघात

इस प्रकार उच्चारण में किसी पद पर जो बल पड़ता है, उसे बलाघात कहते हैं। वक्ता के मंतव्य को उभारने के लिए वाक्य में किसी पद विशेष पर बल दिया जाता है। इसके कुछ उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं। इनमें बलाघात वाले पदों को मोटे अक्षरों में छापा गया है।

तुम्हें क्या चाहिए ?

मुझे दूध रोटी चाहिए।

दूसरे वाक्य में 'दूध रोटी' पद का विशिष्ट अर्थ हो सकता है कि वक्ता को दूध रोटी की ही आवश्यकता है और किसी अन्य वस्तु की नहीं। वाक्ता की मनः स्थिति पर निर्भर है कि वह किसी भी पद को विशिष्टता प्रदान करने के लिए उस पर बल दे-

तुम जाओ। (चाहे कोई जाए, चाहे न जाए, तुम अवश्य जाओ।)

तुम जाओ। (अर्थात् रुको मत)

'ही' और 'भी' निपात पर प्रायः बलाघात रहता है और इससे पूर्वपद में विशिष्टता आ जाती है।

तुलना कीजिए-

1. वह ही घर से चला जाएगा।	1. तुम भी वहाँ से घर जाओगे।
2. वह घर से ही चला जाएगा।	2. तुम वहाँ से भी घर जाओगे।
3. वह घर से चला ही जाएगा।	3. तुम वहाँ से घर भी जाओगे।

अनेकाक्षरीय शब्दों में किसी एक अक्षर पर बल रहता है। इस संबंध में कुछ सामान्य नियम नीचे दिए जा रहे हैं। बलाघातयुक्त अक्षर को मोटे अक्षरों में छापा गया है।

1. एक पद में केवल एक अक्षर पर बलाघात होता है।
2. यदि अनेक अक्षरों वाले पद में केवल एक ही दीर्घ अक्षर है तो बलाघात उसी पर होगा: जैसे-

जा-ति (जाति) द-लील (दलील)

की-मत (कीमत) मण्-डी (मण्डी)

पुरस्-कार (पुरस्कार)

3. दोनों अक्षरों में से यदि दूसरा अक्षर दीर्घ स्वर युक्त (व्यंजन + स्वर + व्यंजन साँचे का) हो तो बालाघात उस पर ही पड़ेगा: जैसे-

मि-लाप (मिलाप) मा-लूम (मालूम)

ता-रीख (तारीख)

4. यदि उपान्त्य (अंतिम से पहला) अक्षर दीर्घ हो तो उस पर ही बलाघात होगा: जैसे-

(दो अक्षर) बा-ल् (बाल्)

(तीन अक्षर) कि-राया (किराया)

(चार अक्षर) महा-रानी (महारानी)

5. यदि किसी अक्षर में महाप्राण ध्वनि अथवा व्यंजन-गुच्छ हो तो बालाघात उससे पूर्व अक्षर पर होगा: जैसे-

क-थन (कथन)	अक्-षर (अक्षर)
ग-धा (गधा)	भक्-ति (भक्ति)
र-धिया(रधिया)	सम्-प्रति (सम्प्रति)
मा-धुरी (माधुरी)	

6. अकर्मक से सकर्मक अथवा सकर्मक से प्रेरणार्थक बनाने में बालाघात प्रथम अक्षर से दूसरे अक्षर पर परिवर्तित हो जाता है, जैसे-

ब-ना (बना)	बनाना-बनवाना
सु-ना (सुना)	सुनाना-सुनवाना

7. सामासिक शब्दों में प्रायः दूसरे भाग पर बलाघात होता है: जैसे-

चाल-ढाल(चालढाल)	मच्छर-दानी	(मच्छरदानी)
नक-कटा (नककटा)	हथ-कड़ी	(हथकड़ी)

अनुतान-बोलते समय वाक्यों में जो सुर का उतार-चढ़ाव होता है, उसे अनुतान कहते हैं। अनुतान को वाक्य का अभिलक्षण माना जाता है। एक ही वाक्य को जब भिन्न-भिन्न अनुतानों के साथ बोला जाता है तो वह भिन्न-भिन्न अर्थ देता है: जैसे-

यह बहुत अच्छी तस्वीर है।	सामान्य कथन
यह बहुत अच्छी तस्वीर है ?	प्रश्नसूचक कथन
यह बहुत अच्छी तस्वीर है !	विस्मयसूचक कथन

प्रश्न- अभ्यास

1. हिंदी किस लिपि में लिखी जाती है ? हिंदी की मानक वर्णमाला लिखिए।
2. उच्चारण की दृष्टि से वर्णों के कितने भेद होते हैं ?
3. हिंदी में कितने स्वर हैं ? स्वरों के भेद सोदाहरण बताइए।
4. उच्चारण स्थान के आधार पर हिंदी व्यंजनों का वर्गीकरण कीजिए।
5. उच्चारण प्रयत्न से क्या तात्पर्य है ? उच्चारण अवयवों द्वारा श्वास अवरोध के आधार पर हिंदी के व्यंजनों का वर्गीकरण कीजिए।
6. 'अक्षर' किसे कहते हैं ? उदाहरण देकर समझाइए।
7. वाक्य स्तर पर बलाघात की संकल्पना को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।